International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 211-213

निराला के काव्य के वैचारिक आधार

राघवेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी, हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

निराला की कविता पर लिखते समय आलोचकों ने उनके निजी जीवन या ''निराला के मन' का ज्यादा विश्लेषण किया है, कविता को उसी विश्लेषण के गवाह के तौर पर इस्तेमाल किया है। उनकी कविताओं की सापेक्ष स्वायत्तता और उन कविताओं की अंतर्निहित विचार–सरणि को अक्सर अनदेखा किया गया है। विश्व भर में आलोचना के क्षेत्र में जो सैद्धांतिक विमर्श अब तक सामने आये हैं, उनसे यह बात तो स्पष्ट है कि किसी कवि की घोषित विचारधारा और उसकी रचना में रची–बसी विचारधारा एक ही हो, यह जरूरी नहीं। रचना एक भाषिक संरचना होती है और वह समाज में एक स्वायत्त कला इकाई के रूप में अस्तित्व रखते हुए भी अपने देश और काल की किसी न किसी विचारधारा का अंग होती है। इस रूप में वह लेखक की निजी जीवन और निजी विचारधारा से भी स्वतंत्र हो जाती है। निराला के आलोचकों ने रचना की इस स्वतंत्रता को अनदेखा करके ज्यादातर कविताओं को कवि के निजी जीवन से जोड़ दिया है।

निराला के जीवन और साहित्य पर डॉ. रामविलास शर्मा ने सबसे अधिक लिखा है। उनकी आलोचना पद्धति को बारीकी से देखें तो एक शब्द बार–बार आता है, ''निराला का मन'', ''निराला स्वयं''। वे लिखते हैं, ''निराला के मन में गंध के प्रति प्रबल आकर्षण है।'' फिर शूर्पणखा के एक कथन से ''गुलाब'' का उदाहरण देते हुए ''शूर्पणखा के मन में राम का सौंदर्य गुलाब जैसा'' बताते है और दो पंक्तियों का उद्धरण देकर टिप्पणी करते हैं कि ''यहाँ कवि के मन में गुलाब के प्रति कोई ऐसा मोह नहीं है जिसे भंग करना आवश्यक हो।'' इसी तरह ''स्फटिक शिला'' कविता की व्याख्या करते समय जहाँ वे निराला द्वारा ''एक सद्य स्नाता युवती का चित्रण'' बताते हैं वहीं यह भी कहते हैं कि ''रवीन्द्रनाथ की विजयिनी यहाँ फिर अवतरित हो गयी है'। मगर इस वस्तुगत काव्यवस्तु को कुछ ही पंक्तियों के बाद वे आत्मगत स्वरूप दे देते हैं, ''स्वयं कवि उसके सौंदर्य का प्रत्यक्षदर्शी है।'' फिर निराला के ''मन'' पर आ जाते हैं और कहते हैं, ''मोह और मोहभंग के बीच निराला का मन कैसे झूलता था, यह कविता उसका प्रमाण है।'' दसअसल, वे निराला की सारी कविताओं (और कई कथा कृतियों को भी) निराला के निजी जीवन और 'उनके मन' के ही किसी न किसी अंश का ''प्रमाण'' बताते चलते हैं। राम की शक्ति पूजा'' जैसी नाटकीय कविता को भी डॉ. रामविलास शर्मा निराला के ''मन'' से जोड़ देते हैं। उन्होंने लिखा–

''राम की शक्तिपूजा'' लिखते समय निराला का मन एक और पराजय, ग्लानि के बीच विपर्यस्त लटों वाले राम को देख रहा था, दूसरी ओर अब एक तो पढ़ा–गुना था, उसे समेटकर – उसका सातत्व ले कर – काव्यचित्रों को सजा रहा था। ...

इसी तरह ''अनामिका'' की एक कविता की व्याख्या करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा निराला के जीवन को बीच में ले आते हैं। कविता में ''सूखी भूमि, सूखे तरु, सूखे सिक्त आलवाल'' जैसे बिंब किसी सार्वजनिक और सामाजिक स्थिति का बोध कराते हैं, मगर डॉ. शर्मा कहते हैं, ''इस साहित्यिक संघर्ष का केन्द्र निराला स्वयं थे, ... ''जला है जीवन यह'' – निराला का जीवन कला है। ... निराला के मन की आशाएं, विषाद, उल्लास, निराशा, वीरतापूर्ण कर्म, त्रास, दुःस्वप्न – यह सब कुछ कहीं–न–कहीं हिंदी के इस आंतरिक संघर्ष से जुड़ा हुआ है।''

साहित्य समीक्षा की यह जीवनीपरक या मनोविश्लेषणवादी पद्धति दुनियाभर में खारिज की जा चुकी है क्योंकि इसमें काफी मनमानापन बरते जाने की गुंजाइश रहती है जबकि रचनाकार के ''ःमन'' का या ''जीवन'' का जटिलताभरा स्वरूप उसके जीवन काल में भी जानना आसान नहीं होता, मृत्यु के बाद सिर्फ काव्यभाषा से उसे विश्लेषित करना तो और भी अप्रामाणिक होगा क्योंकि काव्यभाषा तो बहुलार्थक होती है। काव्यभाषा के इस गुण के बारे में भारतीय काव्यशास्त्र में भी और पश्चिमी साहित्यालोचन के सिद्धांतों में भी काफी कुछ कहा गया है। काव्यशास्त्र के इस वस्तुगत अस्तित्व को अनदेखा करके निराला के आलोचकों ने उसकी कविताओं के बजाय उनके जीवन पर ज्यादा ध्यान दिया है। निराला पर एक और किताब का जिक्र अक्सर आता है, यह है दूधनाथ सिंह द्वारा लिखी किताब, ''निराला : आत्महंता आस्था।'' इस किताब में भी, जैसा कि शीर्षक से ही ध्वनित है, निराला के ''आत्म'' या ''निजत्व'' पर ज्यादा जोर है। हालांकि डॉ. रामविलास शर्मा के मुकाबले दूधनाथ सिंह की आलोचना में निराला की रचनाओं की रचनाप्रक्रिया का काफी कुछ वस्तुगत विश्लेषण है, फिर भी ''मैं शैली'' अपनाने वाले निराला की कविताओं से वे भी उनके निजी जीवन को ही जानने–समझने और परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। डॉ. शर्मा की तरह वे भी लिखते हैं – ''उनका (निराला का) सारा जीवन सांसारिक दृष्टि से असफल, अव्यवस्थित, विश्रृंखल, अतिशय अव्यावहारिक और दुखद रहा है। आर्थिक विपन्नता इसमें प्रमुख रही है। इस सांसारिक दुखद नियति के आगे हार–जीत की द्वंद्वपूर्ण मनःस्थिति और उसका अंतस्ताप ही निराला की रचनात्मकता की मुख्य दिशा बन गयी है। यह देख कर हैरानी होती है कि ''बादल राग'' जैसी निर्वैयक्तिक और नाटकीय रचना को भी दूधनाथ सिंह निराला की ''आत्मा'' से या ''निजी जीवन'' से जोड़ देते हैं। वे लिखते हैं : ''निराला ऋतु के माध्यम से अपने जीवन–बिंब को ही बार–बार अवतरित करते हैं, उसे पाते हैं और उसे खो देते हैं।'' इस तरह की आलोचना में एक अंतर्विरोध भी है, क्योंकि वे आलोचक, जब कविताओं का विश्लेषण या ''पाठ'' करते हैं तो उनका आलोचनात्मक विमर्श अक्सर ''निजी जीवन'' या ''आत्मचरित'' से दूर चला जाता है। यह स्थिति डॉ. रामविलास शर्मा और दूधनाथ सिंह दोनों की ही आलोचना पद्धति में देखी जा सकती है।

डॉ. रामविलास शर्मा की पुस्तक ''निराला की साहित्य साधना'' के

द्वितीय खंड को देखें तो हर अध्याय में इस तुलनात्मक प्रवृत्ति की मिसाल मिल जायेगी। इस किताब की शुरूआत ही वे अंग्रेजी कवि मिल्टन और तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती से करते हैं। फिर जगह–जगह हिंदी के अन्य लेखकों को हेठा सिद्ध करते चलते हैं। मसलन, निराला की एक टिप्पणी पर अपनी राय प्रकट करते हुए डॉ. शर्मा यह जोड़ देते हैं कि ''निराला सन् 32 में यह टिप्पणी लिखते हुए जहाँ पहुँचे थे, वहाँ उस समय के नये और पुराने लेखकों को पहुंचने में अभी देर थी''। निराला की भाषा की शक्ति की प्रशंसा करते समय वह बाकी सारे कवियों पर टिप्पणी करते हैं कि ''वे निराला से बड़े कवि नहीं, उनकी भाषा में वह शक्ति नहीं जो निराला की भाषा में है।'' निराला के छंदों की स्वच्छंद लय के विकास के बारे में लिखते समय टिप्पणी की, ''हिंदी में उसका जैसा विकास निराला में हुआ है, वैसा अन्य कवि में नहीं...'' इसी तरह निराला को महान घोषित करने के लिए उनकी एक उक्ति की तुलना लौन्जाइनस की उक्ति से कर दी। एक जगह लिखा, निराला ने शेक्सपीयर के सानेट का सारतत्व खींचकर एक पंक्ति लिखी – ''खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।'' कृत्तिवासीय रामायण के राम की तुलना ''राम की शक्तिपूजा'' के राम से करते हुए डॉ. रामविलास शर्म ने लिखा, ''राम के आंसू असाधारण हैं। उन्हें देखकर शक्ति के अक्षय स्रोत चंचल हो उठते हैं, ''ये अश्रु राम के'' आते ही मन में विचार/उद्वेल हो उठा शक्ति खेल सागर अपार। शक्ति सागर का यह उद्वेल इसीलिए संभव है कि निराला की आंखों में आंसू आसानी से नहीं आते। ऐसी भाव–संयम, उनके भंग होने पर करुणा की ऐसी अपूर्व अभिव्यक्ति केवल शेक्सपीयर में है।'' तुलना करने की यह प्रवृत्ति डॉ.रामविलास शर्मा की आलोचना में उसी तरह व्याप्त है जैसे कवियों के ''मन'' या ''व्यक्तित्व'' का विश्लेषण करने की अनाधिकार कोशिश। ''अभिप्राय'' नामक हिंदी आलोचकों की तरह इस काम में सिद्धहस्त है) फौरन तुलना कर डालते हैं और कहते हैं : ''...मुक्तिबोध किसान आंदोलन से कटे हुए थे। उनकी कृति ''अंधेरे में'' असामान्य मनोदशा की रचना है। ... इसके विपरीत निराला अपने समय में सामाजिक सरोकरों से सर्वाधिक रूप से कवियों में प्रथम ठहरते हैं। मुक्तिबोध कहीं भी निराला के समक्ष नहीं ठहरते – आज भी मेरा यह मानना है।'' इस इंटरव्यू में भी गौर से देखें तो ''मनोदशा'' और अपने इष्ट को महानतम सिद्ध करने की प्रवृत्ति मौजूद है।

अन्य कवियों को नीचा सिद्ध करने की प्रवृत्ति हिंदी आलोचना में खूब मिलती है और अभी इससे मुक्ति नहीं। निराला पर लिखने वाले अन्य लेखक भी इस तरह की तुलनात्म्क टिप्पणी करते हैं। दूधनाथ सिंह ने भी अपनी पुस्तक, ''निराला : आत्महंता आस्था'' में निराला की प्रेम कविताओं को व्याख्यायित करते समय कबीर, जायसी और रवींद्रनाथ ठाकुर से उनकी तुलना की है और यह दर्शाया है मानो ये रचनाकार निराला के मुकाबले कमजोर थे। परमानंद श्रीवास्तव ने भी इसी तरह लिखा : ''पूरे छायावाद युग में और संभवतः छायसावादोत्तर युग में भी निराला जैसी प्रतिभा का दूसरा रचनात्मक लेखक नहीं है। निराला हर तरह से हिंदी की जातीय रचनात्म्क परम्परा के अद्वितलय लेखक है।''

निराला जिस समाज और समय से रचनाकर्म कर रहे थे, उस समय तक हिंदी भाषा का जो विकास हो पाया था, उसे और आगे तक ले जाने के उद्देश्य से भाषा के बारे में भी उन्होनें काफी चिंतन किया था। उनकी कुछ मान्यताएं आश्चर्यजनक रूप से रोलां बार्थ की मान्यताओं से मिलती है जबकि रोलां बार्थ का सैद्धांतिक लेखन छठे दशक के रूप में प्रकाश में आया था, वह भी फ्रेंच भाषा में। भाष की बहुलार्थक प्रकृति के बारे में उन्होंने संस्कृत वांड्मय की उक्ति'', ''एक सद्विप्रा बहुधा वदंति'' का सहारा लेकर लिखा, सैद्धांतिक बहस से ज्यादा न उल्ग कर उन्होनें तुलसीदास, गालिब, मीर नजीर अकबराबादी की रचनाओं का अपना भाष्य या ''पाठ'' भी प्रस्तुत किया। हलके–फुलके तरीके ही से सही, उन्होंने दुलारेलाल भार्गव के एक दोहे के छः अर्थ मैंने किऐ हें, और भी अनेक होते हैं। अभी यहाँ इतने ही दिए, विचारशील पाठक अर्थों की सार्थकता देखें।

यहाँ निराला ने यह संकेत भी दे दिया कि जरूरी नहीं सारे अर्थ ठीक ही लगें, पाठक खुद, उसका निर्णय करें यानी पाठक के लिए एक अन्य अर्थ की संभावना को उन्होंने खुला रखा। इस खुलेपन में पाठक की अपनी रचनात्मकता की गुंजाइश बनी रहती है। यह समझ, हो सकता है, उन्हें तुलसी साहित्य की बहुसार्थकता या गालिब की रचनाओं की बहुलार्थकता से हासिल हुई हो जिसके प्रमाण उनके निबंधों में मिलते हैं।

निराला की कविताओं में भी भारतीय नवजागरण की विचार प्रणालियों के अंतर्विरोध हैं, इसलिए उनकी सारी कविताओं का एक ही वैचारिक आधार नहीं है। ''महाराज शिवाजी का पत्र'' शीर्षक कविता का वही वैचारिक आधार नहीं है जो ''बादल राग'' का या फिर ''राजे ने अपनी रखवाली की'' जैसी कविताओं का है। हालांकि ''स्वतंत्रता'' के मूल्य को फलित देखने की चाह तीनों कविताओं के वाचकों को है जो कि इस दौर का आधारभूत मूल्य है, फिर भी ''महाराज शिवाजी का पत्र'' वस्तुगत रूप में (निराला के मन में चाहे जो कुछ रहा हो, वह यहाँ महत्वपूर्ण नहीं है और उस मंतव्य की तलाश विकसित काव्यालोचन का काम भी नहीं है) अतीत के उस सांप्रदायिक वैचारिक आधार की कविता ही ठहरती है जिसका पोषण राजे महाराजे करते रहे, अंग्रेज़ शासक भी करते रहे और स्वाधीन भारत में भी शोषक–समाज वर्ग आज भी कर रहे है। ''बादल राग'' कृषक मुक्ति की विचारधारा की कविता है, ''राजे ने अपनी रखवाली की'' का वैचारिक आधार मज़दूर वर्ग की विचारधारा यानी मार्क्सवाद–लेनिनवाद है क्योंकि उसी विज्ञान के प्रकाश में यह सत्य उजागर होता है कि शोषण पर आधारित वर्गीय सामाजिक ढांचे में ''राजे'' यानी शासकवर्ग के हित साधन के लिए ही ''सुपरस्ट्रक्चर'' होता है, कवि, कलाकार, इतिहासकार आदि उसी ''सुपरस्ट्रक्चर'' के हिस्से होते हैं। आइए, इन तीनों कविताओं के वैचारिक आधार के अंतर को जानने के लिए इनका पाठात्मक विमर्श सामने रखें।

''महाराज शिवाजी का पत्र'' कविता को देखते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने इस कविता को निराला की ''वक्तृत्वकला'' के खाते में डाल कर छुट्टी कर ली क्योंकि इस कविता में ''निराला का मन'' या ''जीवन'' ढूंढने की कोई गुंजाइश नहीं थी। उन्होंने लिखा, ''महाराज शिवाजी का पुत्र'' एक लंबी वक्तृता है। इसमें पत्र–लेखन–कला नहीं, भाषणकला है। कविता मानो लिखी इस उद्देश्य से गयी है...'' (निराला की साहित्य साधना, खंड–2) दूधनाथ सिंह ने भी कहा कि ''वाग्मिता इस कविता का सबसे बड़ा गुण है, जिसे अंग्रेज़ी में ''इलोक्वेंस'' कहते हैं।'' (निराला : आत्महंता आस्था) मगर दूधनाथ सिंह ने इस कविता के संदर्भ में उसकी अंतर्वस्तु को, डॉ शर्मा की तरह, अनदेखा नहीं किया। उन्हें लगा कि यह कविता ''सांस्कृतिक क्षय'' की चिंता को मुखरित करती है। लेकिन ''व्यक्तित्व'' पर ही निगाह टिकाने की हिंदी आलोचना की आदत की वजह से उन्होंने यह लिखा : ''जिस तरह वे'' एक ओर हिंदू एक ओर मुसलमान हो'' की बात करते हैं, व्यक्ति के जातिगत खिंचाव की वकालत करते हैं – आज वे धर्मनिरपेक्ष हिंदुस्तान में यह शब्दावली बड़ी अटपटी लगती है। इस तरह की शब्दावली से निराला के कुल व्यक्तित्व पर ही कभी–कभी शंका होने लगती है।'' निराला के ''देव, द्विज'' के बारे में और मुसलमानों के बारे में

घोषित विचार इस कविता में निहित या प्रतिफलित विचारों से बिल्कुल उलट हैं। उनमें न तो ''देव, द्विज'' को ऐसा गौरव प्रदान किया गया है और मुसलमानों को तो कहीं भी शायद इस तरह नफरत का निशाना नहीं बनाया गया है। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक के ''विचारधारा'' खंड में ''राष्ट्रीय एकता और मुसलमान'' शीर्षक अध्याय में जो उद्धरण दिये हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि निराला के घोषित विचार कतई सांप्रदायिक नहीं थे, वे भारत में बसे सभी धर्मों के लोगों और जातीयताओं को भारतीय मानकर उनकी एकता के लिए समर्पित थे। इसी तरह ''देव, द्विजों'' को गौरवान्वित न करके वे मनुष्य और मनुष्य की बराबरी के पक्ष में थे। मगर उक्त कविता में से निकलने वाली विचारधारा उनके निजी विचारों से स्वतंत्र होकर बिल्कुल उलट हो गयी। दूधनाथ सिंह को इसीलिए लिखना पड़ा कि ''इस कविता की ओजस्विता और वाग्मिता की तारीफ करते हुए भी वस्तु के स्तर पर इसकी वकालत शायद उचित नहीं होगी।''

''बादल राग'' में निराला की छह कविताएं हैं। ज्यादातर आलोचकों ने इन्हें अलग–अलग रंगत और अलग–अलग भावभूमि की कविताएं कहा है। निराला ने खुद भी अपनी एक व्याख्या या अपना ''पाठ'' प्रस्तुत किया है जिसमें एक ओर इन्होंने इसकी अर्थ–बहुलता का संकेत दिया है वहीं काव्यवस्तु के रूप में ''बुराई के खिलाफ ''बगावत'' को रेखांकित किया है। इन्हें अलग–अलग रंगत और भावभूमि की कविताएं मानते हुए सभी आलोचकों ने इनके वैचारिक आधार को एक ही नहीं बताया। इसीलिए दूसरी और छठी कविता को ही ज्यादा महत्व दिया है। दूधनाथ सिंह ने लिखा, ''बादल राग'' की सभी कविताएं इस विप्लव की भूमिका में नहीं रखी गयी हैं। सबकी भावभूमि अलग–अलग है।'' (निराला : आत्महंता, आस्था) फिर आगे कहा, ''बादल राग'' क्रम की दूसरी तथा छठी ये दो कविताएं क्रांति की भूमिका से संबद्ध हैं। लगभग इसी तरह की बात डॉ. दिनेश्वर प्रसाद ने ''बादल राग'' पर लिखे अपने एक लेख में कही है और उन कविताओं का उन्होंने अपना ''पाठ'' भी इसी नज़रिये से कर डाला है। यह ज़रूर है कि उन्होंने पहली कविता को भी दूसरी और छठी कविता की संवेदना से संबंधित घोषित किया है, मगर तीसरी, चौथी, पांचवीं कविता को इस केंद्रीय संवेदना से काटकर सतही तौर पर व्याख्यायित कर डाला है और पांचवीं कविता में तो बादल को ''परमात्मा के व्यक्त रूप का प्रतीक'' ही बता दया है। (निराला–आलोचकों की दृष्टि में)

निराला की अपनी विचारधाराओं का विकास हुआ होगा, अपने अनुभव, चिंतन, अध्ययन कर दोस्तों के संग साथ से तरह–तरह के विचारों को उन्होंने आत्मसात किया होगा जैसा कि हर कवि के साथ होता है। मगर उनकी कविताओं का वैचारिक आधार उनके घोषित विचारों का पद्यानुवाद हो, ऐसा ज़रूरी नहीं। हर कविता समाज सापेक्ष वैचारिक आधार रखती है, इसलिए जो आलोचक एक ही विचारधारा तलाश करना चाहेंगे, उन्हें निराला के जीवन की ओर जाने की अवैज्ञानिक कोशिश करनी पड़ेगी ही और इससे गलत नतीजे निकल सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. निराला की साहित्य साधना–2, पृ. 224, 227, 228.
2. निराला की साहित्य साधना–2, पृ. 529, 172.
3. निराला (मोनोग्राफ) साहित्य अकादमी, परमानन्द श्रीवास्तव, 1985, पृ. 18.
4. निराला (मोनोग्राफ) साहित्य अकादमी, परमानन्द श्रीवास्तव, 1985, पृ. 29, 38, 57.
5. निराला की साहित्य साधना (द्वितीय खण्ड), रामविलास शर्मा, पृ. 114, 408, 444, 495, 530, 533.
6. 'अभिप्राय' पत्रिका अंक–20, जनवरी–मार्च 1998, पृ. 47.
7. ''निराला : आत्महत्या आस्था'', दूधनाथ सिंह, पृ. 33–34, 21.
8. निराला ग्रंथावली, सं. ओंकार शरद, भाग–1, पृ. 562.
9. निराला – आलोचकों की दृष्टि में, पृ. 91.